ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

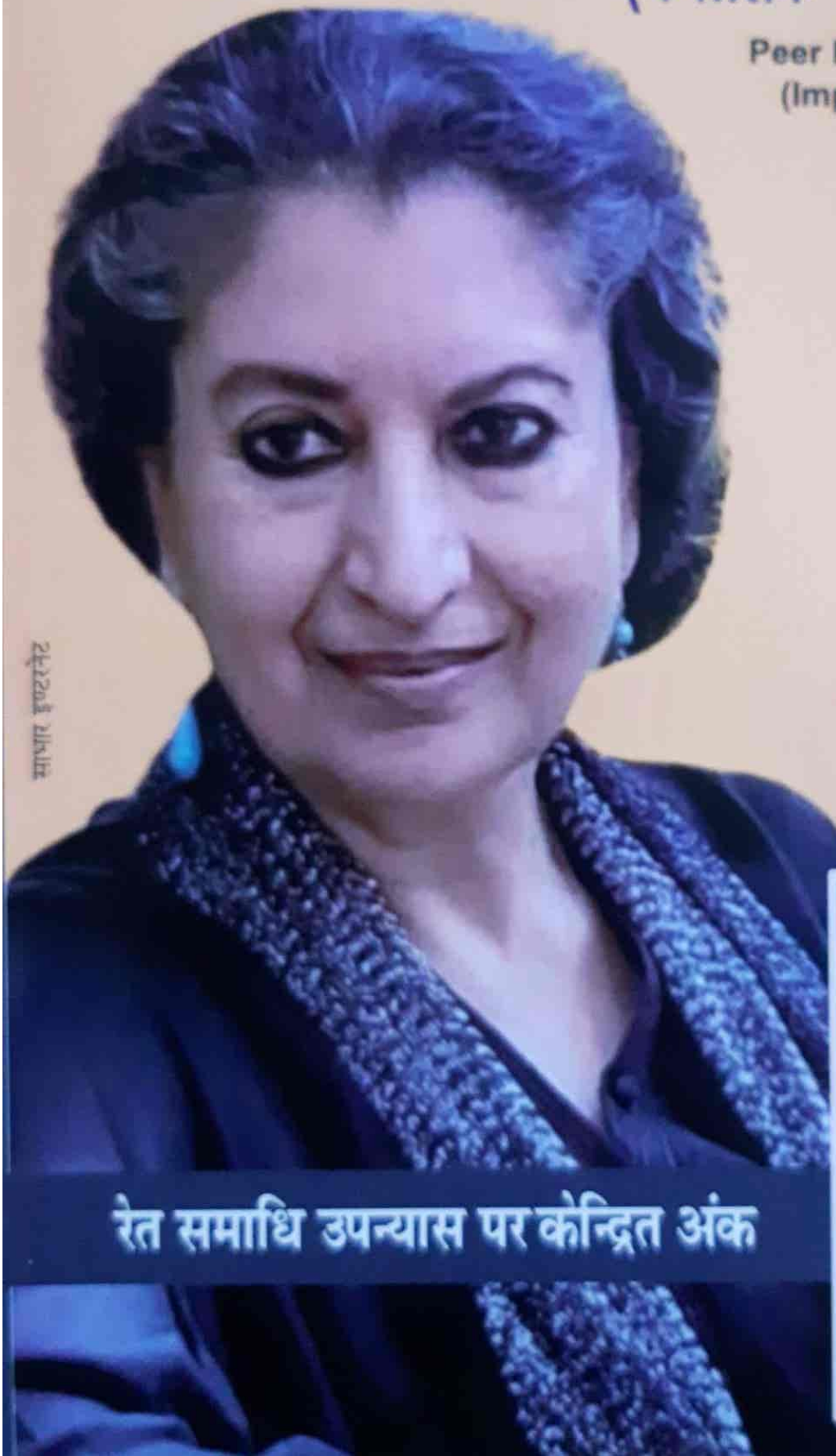

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

रेत समाधि उपन्यास पर केन्द्रित अंक

रेत समाधि उपन्यास का समीक्षात्मक अनुशीलन

डॉ. प्रीति सिंह

साहित्यकार मानवीय जीवन के बिखरे हुए सभी पहलुओं को विशिष्ट प्रकार से संजोकर साहित्य के रूप में सृजित करता है। हिंदी कथा-साहित्य मुख्य रूप से समाज के प्रत्येक वर्ग एवं मानव मन की संवेदना को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। समकालीन उपन्यासों में एक नवीन जीवन दृष्टि मिलती है। सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विषम परिस्थितियों के कारण आज के मानव को मोहभंग, विफलता बोध, कुंठा, संत्रास जैसी भावनाएँ पूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। जिनके कारण संबंधहीनता, व्यर्थता बोध, संवादहीनता, आत्म निर्वासन आदि भावनाएँ विकट रूप में प्रकट होती जा रही हैं। वर्तमान में प्रत्येक मनुष्य बाहर से सभ्य एवं परिपूर्ण है, परंतु भीतर से उतना ही खंडित अंतर्द्वंद्वों से जूझता हुआ या फिर यूँ कहें कि अकेलेपन की पीड़ा व संत्रास को अपने भीतर छिपाए हुए जीवन व्यतीत कर रहा है। समकालीन हिंदी उपन्यासों में अब खुलकर इन भावनाओं, संत्रास, पीड़ा, अंतर्द्वंद्व एवं स्वयं की पहचान की खोज को केंद्र में रखकर लेखन किया जा रहा है।

उपन्यास में कथाकार यथार्थवादी दृष्टि अपनाते हुए अपने चारों ओर बिखरे जीवन में से ही अपने लिए कथा सूत्र चुनता है। साहित्य में प्राचीनता के साथ नवीनता का सामंजस्य ही समकालीनता है। समकालीनता में एक ओर जीवन के प्रति क्रियाशील होने का भाव है, तो दूसरी ओर अतीत और भविष्य दोनों से अलग हटकर युगबोध की स्थिति विशेष को अभिव्यक्त करना है। रेत समाधि उपन्यास समकालीन प्रवृत्तियों को उद्घाटित करता है।

गीतांजलि श्री प्रसिद्ध लेखिका के रूप में जानी जाती हैं। आपके अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए हैं जो कहीं-न-कहीं आज के मानव के मन के अंतर्द्वंद्व, पीड़ा और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देते हैं।